।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०८३ सिद्धार्थि नाम संवत्सरे ई. स. 2026-2027

श्री वल्लभाब्द ५४८ - ५४९ शालिवाहन शके १९४८ पराभव नाम संवत्सरे

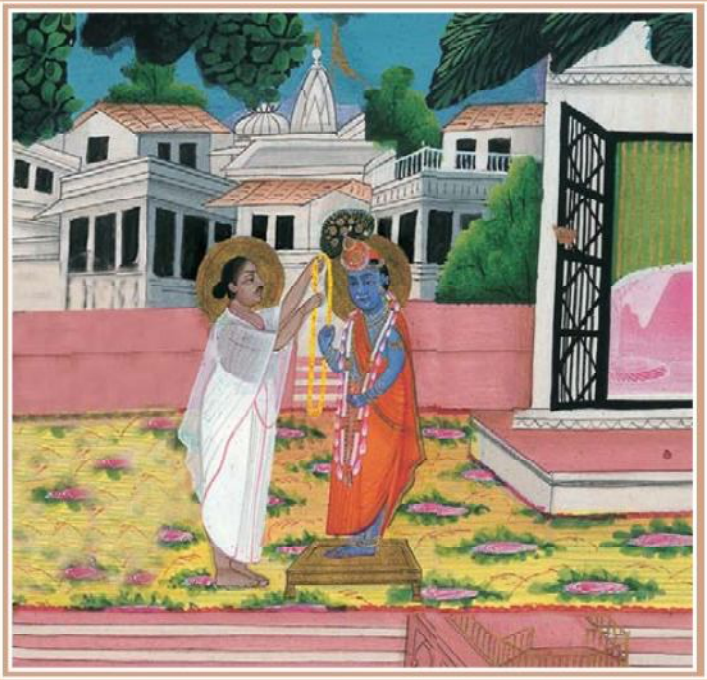

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित
आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

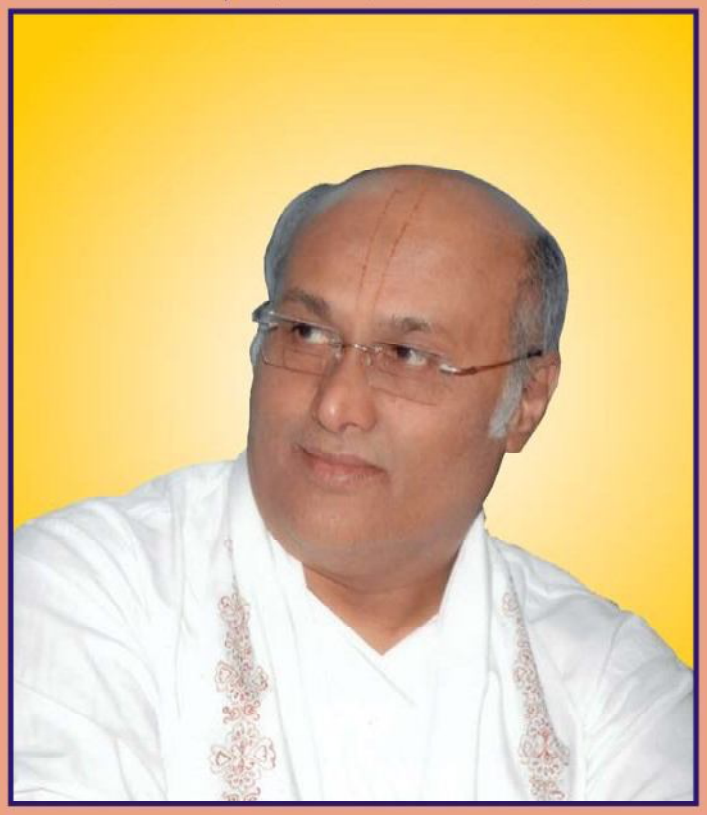

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन - १९५०

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्रत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति 1,00,000 *{न्योछावर १०/- रुपया}*

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के पृष्ठ ३२ से ३४ तक सुबोधिनी जी के उपदेश प्रकाशित किये है। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष
विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५४८	चैत्र शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	शुक्र	20	मार्च, सन् 2026
३	शनि	21	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	रवि	22	पंचरंगी लहरियाँ (हरि गणगौर)
५	सोम	23	गुलाबी गणगौर
६	मंगल	24	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	बुध	25	
८	गुरु	26	
९	शुक्र	27	रामनवमी व्रतम्।
१०	शनि	28	रामनवमी व्रत की पारणा प्रातः ८ बजके ४७ मिनिट पूर्व
११	रवि	29	कामदा एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	सोम	30	
१३	मंगल	31	
१४	बुध	1	अप्रेल
१५	गुरु	2	इष्टिः

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४८ **वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०८३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	3	
२	शनि	4	
३	रवि	5	
४	सोम	6	
५	मंगल	7	
६	बुध	8	
७	गुरु	9	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः।
८	शुक्र	10	
९	शनि	11	
१०	रवि	12	पाँच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	सोम	13	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्यजी (श्रीमहाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४९ को प्रारम्भः।
१२	मंगल	14	मेष संक्रान्तिः। सतुआ गोपीवल्लभ या राजभोग में। पुण्यकाल आज सूर्योदय सूं दोपहर १ बजके ३३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी प्रातः ७ बजके ३३ मिनिट सूं अति मुख्य पुण्यकाल है। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति १२ मंगल कूं प्रातः ९ बजके ३३ मिनिट पर बैठी है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो।
१३	बुध	15	
१४	गुरु	16	
३०	शुक्र	17	

वल्लभाब्द ५४६ **वैशाख शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०८३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	18	इष्टिः।
२	रवि	19	
३	सोम	20	अक्षय तृतीया जलकुम्भदानम्, चन्दनयात्रा त्रेतायुगादि।
५	मंगल	21	
६	बुध	22	
७	गुरु	23	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६६०)
८	शुक्र	24	
९	शनि	25	
१०	रवि	26	
११	सोम	27	मोहिनी एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	28	
१३	बुध	29	
१४	गुरु	30	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	शुक्र	1	मई

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	निज ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	2	इष्टिः।
२	रवि	3	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	सोम	4	कली के शृंगार को आरम्भः।
४	मंगल	5	
४	बुध	6	
५	गुरु	7	
६	शुक्र	8	
७	शनि	9	
८	रवि	10	
६	सोम	11	
१०	मंगल	12	
११	बुध	13	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	14	
१३	शुक्र	15	
३०	शनि	16	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४९	**अधिक ज्येष्ठ शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	17	इष्टिः। पुरुषोत्तम मास को आरम्भ। कांस्य के पात्र में ३३ पूआ अथवा पक्वान्न भोग धरके वाको प्रतिदिवस दान या मास में प्रशस्त है। नित्य न बने तो हूँ प्रथम दिवस तथा आगे द्वादशी में लिखे ५ पर्वन में अवश्य करनो दान को संकल्प एवं श्लोक पृष्ठ २८-२९ पर लिखे हैं। पुरुषोत्तम मास सम्बन्धी भोग स्नान दानादि नियमन को आरम्भ या मास में नित्य सेवा को विशेष नियम तथा भगवान्नाम जाप, गीता भगवतादिकन के पाठ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन गोपूजनादि जो बन सके तो कछूं भी सत्कृत्य नित्य अवश्य करनो।
२	सोम	18	
३	मंगल	19	
४	बुध	20	
५	गुरु	21	
६	शुक्र	22	
८	शनि	23	
९	रवि	24	
१०	सोम	25	आज दोपहर ३ बजके ३८ मिनिट सूं लेके अधिक ज्येष्ठ कृष्ण ८ सोमवार दिनांक ८.६.२०२६ को दिन के १ बजके ३३ मिनिट तक सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है, तांसू इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
११	मंगल	26	
११	बुध	27	कमला एकादशी व्रतम्, या दिन व्यतीपात होयवे सूं कछु भी विशेष भोग श्री कूं धरनो तथा थोड़ो बहुत कछु भी दान ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति करनो। दोनों एकादशी में नित्य पात्र दान दूधधर की अथवा फलाहार की वस्तु सूं करनो चाहिए। दान नित्य न बन सके तो हूँ दोऊ द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, व्यतीपात इन पाँच पर्वन में अवश्य ही करनो। इन पर्वन में गोपूजन को बड़ो ही फल है।
१२	गुरु	28	
१३	शुक्र	29	
१४	शनि	30	
१५	रवि	31	पुण्यदिनम्।

श्रीनाथजी शरणम्

वल्लभाब्द ५४६	अधिक ज्येष्ठ कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	1	जून, इष्टिः।
२	मंगल	2	
३	बुध	3	
४	गुरु	4	
५	शुक्र	5	
६	शनि	6	वैधृति योग १० बजके ५ मिनिट पश्चात्, पुण्यदिनम्।
७	रवि	7	१० बजके २ मिनिट तक या दिन वैधृति हे तासूं ये भी अति पुण्य को समय है। तासूं कछु भी श्री के मनोरथ दानादिक यथाशक्ति करनो।
८	सोम	8	
९	मंगल	9	
१०	बुध	10	
११	गुरु	11	कमला एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	12	
१३	शनि	13	
१४	रवि	14	
३०	सोम	15	सोमवती अमावस योग प्रातः ८ बजके २५ मिनिट तक, पुण्यदिनम्। पुरुषोत्तम मास की समाप्ति। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४९	निज ज्येष्ठ शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	मंगल	16	
३	बुध	17	
४	गुरु	18	
५	शुक्र	19	श्री के नाव को मनोरथ।
६	शनि	20	
७	रवि	21	
८	सोम	22	
९	मंगल	23	
१०	बुध	24	श्री गंगादशमी, गंगादशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	गुरु	25	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	26	
१३	शनि	27	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१९००), स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१४	रवि	28	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा)
१५	सोम	29	

श्रीनाथजी मंदिर

वल्लभाब्द ५४६	आषाढ़ (गु. निज ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	30	इष्टिः।
१	बुध	1	जुलाई
२	गुरु	2	
३	शुक्र	3	
४	शनि	4	
५	रवि	5	
६	सोम	6	
७	मंगल	7	
८	बुध	8	
९	गुरु	9	
१०	शुक्र	10	
१२	शनि	11	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१३	रवि	12	
१४	सोम	13	
३०	मंगल	14	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	आषाढ़ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	15	इष्टिः, रथयात्रा।
२	गुरु	16	
३	शुक्र	17	
५	शनि	18	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	रवि	19	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)
७	सोम	20	
८	मंगल	21	
९	बुध	22	
६	गुरु	23	
१०	शुक्र	24	बैंगन दशमी।
११	शनि	25	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण, पूज्यपाद ति. महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया जा सकेगा।
१२	रवि	26	
१३	सोम	27	
१४	मंगल	28	
१५	बुध	29	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	30	हिन्दोलारम्भः। इष्टिः।
२	शुक्र	31	
३	शनि	1	अगस्त
४	रवि	2	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५	सोम	3	
६	मंगल	4	
७	बुध	5	
८	गुरु	6	जन्माष्टमी की बधाई।
९	शुक्र	7	
१०	शनि	8	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव, (हाण्डी) उत्सव (१७६३)।
११	रवि	9	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	10	
१४	मंगल	11	
३०	बुध	12	हरियाली अमावस।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	श्रावण शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	13	इष्टिः।
२	शुक्र	14	
३	शनि	15	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	रवि	16	
५	सोम	17	नाग पंचमी।
६	मंगल	18	
७	बुध	19	
८	गुरु	20	
९	शुक्र	21	सात स्वरूप को उत्सव, नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	शनि	22	
११	रवि	23	
१२	सोम	24	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं प्रातः शृंगार में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	मंगल	25	गुरुन को पवित्रा धरावने।
१३	बुध	26	ऋग्वेदीन की श्रावणी।
१४	गुरु	27	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७)। यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।
१५	शुक्र	28	रक्षाबन्धन प्रातः शृंगार में प्रातः ६ बजके ४६ मिनिट पूर्व। श्री गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२), आपस्तम्भ हिरण्य केशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति तथा तैतरीय की श्रावणी। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	29	गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज को उत्सव (१६१७), हेम हिन्दोला।
२	रवि	30	
३	सोम	31	कज्जली तीज, हिन्दोला विजय सायं संध्या में।
४	मंगल	1	सितम्बर
६	बुध	2	
७	गुरु	3	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	शुक्र	4	जन्माष्टमी व्रतम्।
६	शनि	5	नन्द महोत्सव।
१०	रवि	6	
११	सोम	7	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	8	
१३	बुध	9	
१४	गुरु	10	काका वल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	शुक्र	11	कुशग्रहणी अमावस, इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	भाद्रपद शुक्लपक्ष	विक्रमाब्द २०८३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	12	राधाष्टमी की बधाई।
२	रवि	13	सामवेदीन की श्रावणी।
३	सोम	14	गणेश चतुर्थी।
४	मंगल	15	
५	बुध	16	ऋषिपंचमी, द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६	गुरु	17	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	शुक्र	18	
८	शनि	19	राधाष्टमी।
९	रवि	20	
१०	सोम	21	
११	मंगल	22	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी), नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४), वामन द्वादशी, विष्णु शृंखल योग।
१२	बुध	23	
१३	गुरु	24	
१४	शुक्र	25	
१५	शनि	26	सांझी को आरम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	27	इष्टिः। श्राद्ध पक्ष को आरम्भ, ताको निर्णय पृ. ३० एवं श्राद्ध पक्ष को संकल्प पृ. ३१ पर लिख्यो है।
२	सोम	28	
३	मंगल	29	
४	बुध	30	
५	गुरु	1	अक्टूबर। श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	शुक्र	2	
७	शनि	3	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)। अष्टमी का क्षय होयवे सूं आज।
६	रवि	4	
१०	सोम	5	
११	मंगल	6	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	बुध	7	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)।
१३	गुरु	8	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)।
१४	शुक्र	9	
३०	शनि	10	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	आश्विन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	11	इष्टिः। मातामह श्राद्ध, नवरात्रारम्भः।
२	सोम	12	
३	मंगल	13	
४	बुध	14	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१८५४)।
५	गुरु	15	
६	शुक्र	16	
७	शनि	17	सरस्वती पूजनारम्भः।
७	रवि	18	
८	सोम	19	
६	मंगल	20	दशहरा (विजयदशमी), सरस्वती विसर्जनम्।
१०	बुध	21	श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	गुरु	22	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	23	
१३	शनि	24	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४	रवि	25	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
१५	सोम	26	इष्टिः। कार्तिक स्नानारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	27	
३	बुध	28	
४	गुरु	29	
५	शुक्र	30	
६	शनि	31	
७	रवि	1	नवम्बर
८	सोम	2	
९	मंगल	3	
१०	बुध	4	
११	गुरु	5	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	6	
१३	शनि	7	धनतेरस।
१४	रवि	8	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव), हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्), कान जगाई।
३०	सोम	9	अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धन पूजा। सोमवती अमावस्या योग १२ बजके ३२ मिनिट तक। इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	कार्तिक शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	10	गुर्जराणां २०८३ वर्षारम्भः।
२	बुध	11	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	गुरु	12	
४	शुक्र	13	
५	शनि	14	
६	रवि	15	
७	सोम	16	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)।
८	मंगल	17	गोपाष्टमी।
६	बुध	18	अक्षयनवमी। कृतयुगादि। कूष्माण्डदानम्।
६	गुरु	19	
१०	शुक्र	20	
१२	शनि	21	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में। श्री गुसांईजी के प्रथमलालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५६७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१३	रवि	22	
१४	सोम	23	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	मंगल	24	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

श्रीजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४९	मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	25	इष्टिः। व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः।
२	गुरु	26	
३	शुक्र	27	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी (महाराज) कृत। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
५	शनि	28	
६	रवि	29	
७	सोम	30	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१९८४)
८	मंगल	1	दिसम्बर, श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५९९)।
९	बुध	2	
१०	गुरु	3	घटा को आरम्भ (हरिघटा)
११	शुक्र	4	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	5	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)।
१३	रवि	6	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)।
१४	सोम	7	
३०	मंगल	8	श्यामघटा।

श्रीनाथजी प्रकाशन

वल्लभाब्द ५४६

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः

विक्रमाब्द २०८३

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	9	इष्टिः।
१	गुरु	10	
२	शुक्र	11	दूज को चन्दा।
३	शनि	12	
४	रवि	13	
५	सोम	14	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
६	मंगल	15	
७	बुध	16	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८), धनुर्मासारम्भः प्रातः १० बजके २५ मिनिट सूं।
८	गुरु	17	सातस्वरूप को उत्सव। श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
९	शुक्र	18	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई। लालघटा।
१०	शनि	19	
११	रवि	20	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	21	
१३	मंगल	22	
१४	बुध	23	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। पूर्णिमा को क्षय होयवे सूं आज।

वल्लभाब्द ५४६	**पौष (शु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	24	इष्टिः। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	शुक्र	25	
३	शनि	26	
४	रवि	27	
५	सोम	28	
६	मंगल	29	
७	बुध	30	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	गुरु	31	
९	शुक्र	1	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)। जनवरी सन् २०२७ को प्रारम्भ।
१०	शनि	2	
११	रवि	3	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)।
१२	सोम	4	
१३	मंगल	5	
१४	बुध	6	
३०	गुरु	7	गोस्वामी तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो. १०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन (२०३७)।

श्रीनाथजी मन्दिर

तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	8	इष्टिः।
२	शनि	9	
३	रवि	10	
३	सोम	11	
४	मंगल	12	
५	बुध	13	
६	गुरु	14	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१६५३)। भोगी, धनुर्मास की समाप्ति।
७	शुक्र	15	मकर संक्रान्तिः। तिलवा गोपीवल्लभ में अथवा राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति ६ गुरु कूं रात्रि के ६ बजके ११ मिनिट पर बैठे है। तासूं पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके दिनके ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के २ घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
८	शनि	16	
६	रवि	17	
१०	सोम	18	
११	मंगल	19	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१३	बुध	20	
१४	गुरु	21	
१५	शुक्र	22	माघ स्नानारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४९	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	23	इष्टिः।
२	रवि	24	
३	सोम	25	
५	मंगल	26	
६	बुध	27	
७	गुरु	28	पीली घटा।
८	शुक्र	29	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)।
९	शनि	30	
१०	रवि	31	
१०	सोम	1	फरवरी।
११	मंगल	2	षट्तिला एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	3	
१३	गुरु	4	
१४	शुक्र	5	
३०	शनि	6	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	माघ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	7	इष्टिः।
२	सोम	8	
३	मंगल	9	
४	बुध	10	श्री मुकुन्दरायजी का पाटोत्सवः।
५	गुरु	11	बसन्त पंचमी।
६	शुक्र	12	
७	शनि	13	
८	रवि	14	
९	सोम	15	
१०	मंगल	16	
११	बुध	17	जया एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	18	
१३	शुक्र	19	
१४	शनि	20	माघ स्नान की समाप्तिः। होरी डांडो दण्डारोपणं, आज सूर्यास्तान्तरम् सायं ६ बजके ३१ मिनिट पश्चात्, याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव। चतुर्दशी को क्षय होयवे सूं आज।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	21	इष्टिः।
२	सोम	22	
३	मंगल	23	
४	बुध	24	
५	गुरु	25	
६	शुक्र	26	
७	शनि	27	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	रवि	28	
९	सोम	1	मार्च
१०	मंगल	2	
११	बुध	3	
११	गुरु	4	विजया एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	5	
१३	शनि	6	
१४	रवि	7	
३०	सोम	8	सोमवती अमावस योग दोपहर ३.०० बजे तक।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४६	फाल्गुन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	9	इष्टिः।
२	बुध	10	
३	गुरु	11	
४	शुक्र	12	
५	शनि	13	
६	रवि	14	
७	सोम	15	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)।
८	मंगल	16	होलिकाष्टकारम्भः।
९	बुध	17	
११	गुरु	18	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	19	
१३	शनि	20	
१४	रवि	21	होली, होलिका प्रदीपनं १५ सोम के भद्रानिवृत्ति ५ बजकर १६ मिनिट पश्चात् सूर्योदय ६ बजके ३८ मिनिट सूं पूर्व।
१५	सोम	22	धूलिवन्दन (धुरेण्डी), दोलोत्सव (डोल)।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४९	**चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०८३
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	23	इष्टिः। द्वितीया पाट।
२	बुध	24	
३	गुरु	25	
४	शुक्र	26	
५	शनि	27	
६	रवि	28	
७	सोम	29	गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज के पौत्र गो.चि.१०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा साहब) के पुत्र **गो.चि.१०५ श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)।
८	मंगल	30	
९	बुध	31	
१०	गुरु	1	अप्रेल
११	शुक्र	2	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	3	
१३	रवि	4	
१४	सोम	5	
३०	मंगल	6	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

श्रीनाथजी मन्दिर

अधिकमास के दान को संकल्प

अधिक मास में नित्य अथवा पूर्वोक्त दिनन में ३३ पूवा अथवा पक्वान्न ३३ कांस्य के पात्र में धरिके दक्षिणा सहित देने। बने तो घृत सुवर्ण तथा वस्त्र हूं संग देने ताको संकल्प आचमन प्राणायाम करके करनो।

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्याज्ञया प्रवर्त्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे त्रय अशीतिः अधिकद्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे सिद्धार्थिनाम संवत्सरे (नर्मदा) के दक्षिण तीर सूं लेके अष्टाचत्वारिंशत्युत्तर एकोन विंशतिशततमे शालिवाहन शाके पराभवनाम संवत्सरे ऐसो कहनो।

ग्रीष्मऋतौ अधिक ज्येष्ठे पुरुषोत्तम मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरान्वितायाममुकनक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे वृष राशि स्थिते श्रीसूर्ये मिथुन राशि स्थिते श्री देवगुरौ अधिक ज्येष्ठ कृष्ण २ मंगलवारतः कर्क राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्स्वेवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम वर्षत्रयोपार्जित कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसर्गिक समस्त पापक्षयार्थ पुराणोक्त शुभ फल प्राप्त्यर्थं श्रीगोपीजनवल्लभ प्रीत्यर्थमिमांस्त्रयस्त्रिंशद् पूपान् सहिरण्यान् सवस्त्रान् सदक्षिणान् यथानामगोत्राय यस्मै कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये तेन पुण्येन भगवान् सर्वात्मा श्रीगोपीजनवल्लभः प्रीयताम् अपूप के ठिकाने पक्वान्न होय तो 'अपूपस्थानापन्न पक्वानि' ऐसो कहनो और घृत हिरण्यवस्त्रन में सूं न होय। ताके नाम को उच्चारण न करनो।

दान के श्लोक

विष्णुरूपी सहस्त्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः।
अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।१।।
नारायण जगद्बीज भास्करप्रतिरूपधृक्।
दानेनाऽनेन पुत्रांश्च सम्पदं चाभिवर्द्धय।।२।।
यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडो यस्य वाहनः।
शंख करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।३।।
कलाकष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना।
यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः।। ४।।
कुरुक्षेत्रसमो देशः कालः पर्व द्विजो हरिः।
पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम।।५।।
मलानां च विशुद्धयर्थं पापप्रशमनाय च।
पुत्रपौत्रभिवृद्धयर्थं तव दास्यामि भास्कर।।६।।

पूवा देने होय तो प्रथम श्लोक में अपूपान्न प्रदानेन है सो ही कहनो और पक्वान्न देने होय तो पक्वान्नानां प्रदानेन ऐसो कहनो पुरुषोत्तम मास के स्नान दानादि नियम नित्य न बन सके तो हूं वदि ११ गुरुवार सूं ३० सोमवार पर्यन्त इन ५ दिनन में अवश्य करनो चाहिये।

इति शुभम्।

श्रीनाथजी मंदिर

श्राद्धपक्ष को निर्णय

आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्ण पक्ष १, रविवार से आश्विन शुक्ल पक्ष १, रविवार तक
(दिनांक 27.09.2026 से 11.10.2026 तक)

तिथि	वार	दि.	श्राद्ध
आ.कृ.१	रवि	27.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
आ.कृ.२	सोम	28.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
आ.कृ.३	मंगल	29.09	तृतीया (तीज) को श्राद्ध एवं एवं भरणी श्राद्ध
आ.कृ.४	बुध	30.09	चतुर्थी एवं पंचमी (चौथ-पाचम) को श्राद्ध
आ.कृ.५	गुरु	01.10	षष्ठी (छठ) को श्राद्ध
आ.कृ.६	शुक्र	02.10	सप्तमी (सातम) को श्राद्ध एवं व्यतीपात् श्राद्ध
आ.कृ.७	शनि	03.10	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध
आ.कृ.९	रवि	04.10	नवमी (नम) को श्राद्ध एवं अविधवा नवमी
आ.कृ.१०	सोम	05.10	दशमी (दशम) को श्राद्ध
आ.कृ.११	मंगल	06.10	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
आ.कृ.१२	बुध	07.10	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध, सन्यासीन को श्राद्ध एवं मघा श्राद्ध
आ.कृ.१३	गुरु	08.10	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध
आ.कृ.१४	शुक्र	09.10	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
आ.कृ.३०	शनि	10.10	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
आ.शु.१	रवि	11.10	मातामह श्राद्ध

श्रीनाथजी संस्कृत

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. षष्ठी शुक्र कूं व्यतीपात योग होयवे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णुः 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे सिद्धार्थिनाम्नि त्रय अशीतिः अधिक द्विसहस्त्र संख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण पराभव नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद ऋतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते श्रीसूर्ये, कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये कर्क राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्यः करिष्ये।

पुष्टिमार्गीय सेवा

पुष्टिमार्गीय सेवा श्री गोपीजन की बताई हुई है। श्री गोपीजन जैसे श्री ठाकुरजी के सन्निधान में सेवा करती थी और प्रभु के गोचारणार्थ पधारने पर गुणगान करती थीं, उसी रूप में यहां ''सेवायां वा कथायां वा'' के अनुसार अनवसर न हो, तब तक वैष्णव सेवा करते हैं और सेवा से निवृत्त होने पर प्रभु के गुणगान करते हैं। व्रज की पुलिन्दियाँ शूद्र थीं तथा श्री गोपीजन स्त्री थीं और भगवदीय होने से सेवा करती थीं। उसी रूप में यहां ब्रह्म सम्बन्ध लेने पर भक्त स्त्री शूद्रादि सेवा के अधिकारी माने जाते हैं। यहां की शरणागति भी व्रजभक्तों की तरह ही है। प्रत्येक श्री गोपीजन की भावना में पृथक्-पृथक् श्री ठाकुरजी का स्वरूप विराजमान था अथवा जैसे रास में प्रत्येक श्री गोपीजन के साथ श्री ठाकुरजी का सम्बन्ध रहा है। वैसे ही यहां भी प्रत्येक वैष्णव के यहां श्री ठाकुरजी बिराजते हैं अथवा यों समझना चाहिये कि व्रजभक्तों ने जब श्री ठाकुरजी को आत्मनिवेदन किया तो 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते' के अनुसार श्री ठाकुरजी ने भी उनको आत्मनिवेदन किया। उसी रूप में यहां भी वैष्णव के आत्मनिवेदन कर देने पर श्री ठाकुरजी सेवार्थ वैष्णव के यहां पधार कर मानो आत्मनिवेदन करते हैं। श्री यशोदाजी एवं व्रजभक्तों का सेवाक्रम मर्यादा मार्ग की तरह काल नियन्त्रित नहीं था। श्री यशोदाजी जब भी चाहती श्री ठाकुरजी को जगा लेतीं

श्रीनाथजी ग्रन्थ

एवं सेवा करतीं, उसी रूप में यहां पुष्टि सेवा में काल का नियन्त्रण नहीं है। वेणुगीत में पुलिन्दी के वर्णन में कुंकुम लगाना बताया है, उसी रूप में यहां भी वैष्णव कुंकुम (रोली) का तिलक करते हैं। यद्यपि कोश में कुंकुम का अर्थ केसर किया है तो भी रोली में वर्ण से केसर की समानता होने से जैसे तिलोद्भव नहीं होने पर भी साधर्म्य प्रयुक्त 'सार्पपतैलम्' यह व्यवहार होता है, वैसे ही कुंकुम शब्द से रोली का भी ग्रहण किया जा सकता है, इसीलिये वैष्णव केसर की जगह रोली भी लगाते हैं। पुलिन्दियों ने जैसे प्रसादी कुंकुम को लगाया था, उसी रूप में यहां भी प्रसादी रोली आदि लगाने का नियम है। व्रजभक्तों ने 'श्रीमुखं च ते' इत्यादि से श्री ठाकुरजी के प्रत्येक अंग के उच्चारण में श्री शब्द लगाना बताया। उसी रूप में पुष्टि सम्प्रदाय में श्री ठाकुरजी के अंग के उच्चारण में श्री शब्द लगाकर श्रीमुख, श्रीहस्त बोलने का व्यवहार प्रचलित है। श्री ठाकुरजी के गोचारणार्थ वृन्दावन में पधारने पर श्री गोपीजन ''नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्। शिलतृणां कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति'' से प्रभु के श्रम का विचार किया करती थी, उसी रूप में यहां भी प्रभु के श्रम का विचार होता है। युगल गीत में ''उत्सवं श्रमरुचापि'' से स्पष्ट किया है कि प्रभु को श्रम होता है। श्री भागवत में बताया है कि भगवान् ने अपने सखा गोपों को सामग्री लाने के लिये मथुरा में भेजा और यज्ञपत्नियों से अपने

श्रीनाथजी मन्दिर

नाम से सामग्री की याचना कराई, उसी रूप में यहां भी प्रभु सेवार्थ भेंटिये भेजे जाते हैं और समाधानी भी प्रभु सेवार्थ वैष्णवों से सेवा लेता है। श्री गोपीजन वैदिक मंत्रों से सेवा न कर केवल स्नेह से ही सेवा करती थीं, उसी रूप में यहां भी स्नेह से ही सेवा होती है। श्री गोपीजन ने ''भवाम दास्यः'' से अपने को सेविकायें बताईं, उसी रूप में यहां मुखिया आदि पुजारी न कहलाकर सेवक ही कहलाते हैं।

वेद के पूर्वकाण्ड में भी पुष्टि सिद्धान्त - श्री महाप्रभु जी ने श्री ठाकुरजी को विरुद्ध धर्माश्रय बताया है। पूर्वकाण्ड में भी 'नमोह्रस्वाय च वामनाय च', 'नमो बृहते च' इत्यादि से भगवान् को विरुद्ध धर्माश्रय बताया है। श्री महाप्रभुजी ने जैसे जड़चेतन सभी को ब्रह्मरूप बताया है, वैसे ही वेद में भी 'नमो वृक्षेभ्यः', 'नमःश्वभ्यः', 'मगयुभ्यश्च' इत्यादि से जड़ एवं चेतन को ब्रह्मरूप बताया है। यदि जड़ एवं चेतन सभी ब्रह्मरूप न होते तो वेद में जड़ वृक्ष के रूप में तथा चेतन कुत्ता शिकारी के रूप में भगवान् को नमस्कार करना नहीं कहा जाता। श्री महाप्रभुजी ने सब वस्तु को भगवान् के अर्पित करना बताया। वेद में भी 'ब्रीहयश्च में' आदि से सभी वस्तु को यज्ञ भगवान् के अर्पण करना कहा है। ''यज्ञो वै विष्णुः'' के अनुसार भगवान् ही यज्ञ रूप है।

लेखक : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दनजी शास्त्री

श्रीनाथजी मन्दिर

वर्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा	
फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
	चि.हरिरायजी के लालजी २
माघ शु.१३	चि.श्री वदान्य राय जी
फा.शु.३	चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी

कांकरोली	
ज्ये.शु.५	गो. पुरूषोत्तमजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी

	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी
	गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. मधुरमजी
माघ व.४	चि. प्रियम बावा
पौ.सु.६	गो. संजीव कुमार जी गो. संजीव कुमार जी के लालजी १
मार्ग.कृ.४	चि. विट्ठलनाथजी

जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्य बावा

कोटा-कड़ी

भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी
	गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

श्रीनाथजी मन्दिर

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
आसो.व.३	गो. विनयकुमारजी
आषा.व.४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी १
चै.शु.१४	चि. पुलकित बाबा
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १
मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी
	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
मा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी

कामवन

फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रीनाथजी मन्दिर

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
श्रा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी
चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
आ.कृ.६	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
मा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
माघ सु.४	गो. योगेशकुमारजी गो. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रीनाथजी मन्दिर

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. हरिरायजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी गो. चि. उपेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.५	चि. वल्लभलालजी
का.कृ.५	चि. घनश्यामलालजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

श्रीनाथजी मन्दिर

बड़ोदरा, शेरगढ़

का.व.४	गो. द्वारकेशजी
	गो. द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. आश्रयकुमार जी के लालजी २
का.कृ.४	चि. यदुराजजी
आषा.कृ.८	चि. कृष्णराजजी

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापसेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदवल्लभजी
फा.व.५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	चि. पुरुषोत्तमजी
का.शु.४	चि. गोपेशजी
	गो. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	गो. बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी
	गो. उत्सवजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. रसज्ञजी
का.व.१	चि. सर्वज्ञजी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी २
वै.व.३	चि. रसार्द्रजी
भा.सु.३	चि. प्रेमार्दजी
	चि. गोकुलोत्सवजी के लालजी १
चै.सु.६	चि. कृष्णस्यजी
	चि. प्रियांकजी के लालजी १
वै.सु.५	चि. अभ्यंगजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. व्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २
भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
आसो.सु.१	गो. प्रणयकुमारजी
	गो. प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	गो. परितोषकुमारजी

श्रीनाथजी मंदिर

मार्ग.व.८	गो. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा, गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी २
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा
माघ.कृ.१०	श्री श्रृंगार बाबा

अहमदाबाद

का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २
ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा
आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा

मुम्बई

आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
	गो. मनमथरायजी के लालजी १
भाद्र.व.१०	चि. मिथुनरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
का.व.१३	गो. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	गो. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	चि. रघुनाथजी
	चि. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत के लालजी १
पौ.व.१३	चि. गोवर्धनेशजी
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी

माघ व.६	गो. यदुनाथजी
फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
माघ.सु.६	गो. घनश्यामलालजी
	गो. घनश्यामलाल जी के लालजी १
भा.कृ.८	चि. वृजानंदलालजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी

मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी
वै.सु.७	रविरायजी
वै.व.४	गो. योगेशकुमारजी
	गो. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	गो. कमलेशकुमारजी गो. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

श्रीनाथजी मन्दिर

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी चि. अनिरूद्धलालजी के लालजी १
भा.सु.७	चि. स्वानन्द बावा
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी चि. लाडिलेशजी के लालजी १
चै.कृ.१३	चि. अविचलरायजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
	गो. व्रजनाथलालजी के लालजी १
श्रा.सु.७	चि. ध्येयरायजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
	चि. रूचिरबाबा के लालजी १
का.व.८	चि. वल्लभलालजी
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रीनाथजी मंदिर

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी
	विशालकुमारजी के लालजी १
मा.शु.७	अर्णव बावा

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी
	चि. यशोवर्द्धनजी के लालजी १
वै.शु.११	चि. कल्याणरायजी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २

फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
का.व.४	गो. व्रजेन्द्रजी (जूनागढ)
	गो. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी
	चि. जयगोपालजी के लालजी १
आश्वि.कृ.१	चि.भावनेशरायजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
आषा.सु.७	गो. मिलनकुमारजी
	गो. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

श्रीनाथजी मन्दिर

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

"श्रावण"

व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.६	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.११	गो. कन्हैयालाल जी	विरमगाम
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

"भाद्रपद"

सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा
व.४	श्री चन्द्रगोपालरायजी	बडौदरा सूरत

श्रीनाथजी मन्दिर

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा
	''आश्विन''	
सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद
व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर

व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	श्री. जयदेवलाल जी	वीरगाम
व.१४	श्री प्रियव्रतरायजी	मुम्बई
	''कार्त्तिक''	
सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.६	गो. अक्षयकुमारजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई

श्रीनाथजी मंदिर

सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन
सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम
	''मार्गशीर्ष''	
सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विट्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर
	'पौष''	
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा
सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा

सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी	कांकरोली
सु.१२	श्री विट्ठलनाथजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.५	गो. वल्लभ दीक्षितजी	मुम्बई
व.८	श्री श्याम मनोहरजी	मथुरा-पोरबंदर
व.९	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.९	श्री विट्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद
	''माघ''	
सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई
व.५	श्री कल्याणरायजी	सूरत

श्रीनाथजी मंदिर

''फाल्गुन''		
सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.१३	श्री गोकुलनाथजी	माण्डवी-कच्छ
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई
	''चैत्र''	
सु.१०	श्री गोपाललालजी	कोटा-कड़ी
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
सु.१५	श्री रघुनाथलालजी	गोकुल,मुंबई
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली
	''वैशाख''	
सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री किशोरचन्द्रजी	जूनागढ़
सु.९	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्री द्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

श्रीनाथजी मन्दिर

"ज्येष्ठ"

सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.६	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली

"आषाढ़"

सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

।। श्री गोवर्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयेते ।।

वृहद् शिलापूजन

पूज्यपाद तिलकायत १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के शुभाशीर्वाद एवं मंगलमयी प्रेरणा से मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा दिनांक १५-१२-२०२४ के दिन श्री नवनीत प्रियजी प्रभु के चबूतरे पर ५११ किलो की वृहद् शिला का पूजन करते हुए चि. १०५ श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा साहब) ।

दिनांक १९-१०-२०२५ धनतेरस के शुभ दिन श्री नवनीत प्रियजी प्रभु को निज मंदिर में पधराते समय सलामी अंगीकार कराते हुए गोविन्द पलटन श्रीनाथ गार्ड्स ।

श्री नवनीत प्रियजी प्रभु का पुनः निज गृह में प्रवेश

दिनांक १९-१०-२०२५ विक्रम संवत् २०८२ कार्तिक कृष्ण धनतेरस के शुभ दिन एवं पूज्यपाद तिलकायत १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के ७५वें अमृत वर्ष के उपलक्ष्य में श्री नवनीत प्रियजी प्रभु के निज मंदिर का ३५० वर्ष पश्चात् पुनः जीर्णोद्धार करा पूज्यपाद तिलकायत १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज, चि. १०५ श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा साहब), गो. चि. १०५ श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा) एवं संपूर्ण तिलकायत परिवार द्वारा हर्षोल्लास पूर्वक श्री नवनीत प्रिय प्रभु को अपने निज मंदिर में स्वर्ण एवं रत्न जड़ित भव्य एरां दिव्य सुखपाल में असंख्य वैष्णवों एवं भक्तजनों की साक्षी में प्राचीन परम्परानुसार वैदिक मंत्रोच्चार पूर्वक ठाठ बाठ से पधराया गया।

गणितकर्त्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, नक्कारखाना चौक, खर्च भण्डार के पीछे, नाथद्वारा - 313301 (राजस्थान)